बंद कमरे

(एक कमरा जिस में फर्नीचर बेतरतीब ढंग से अटा पड़ा है। दो दीवान हैं जो सोने की चारपाई का काम भी देते हैं। परदा खुलने पर ख़ाविंद एक व्हील चेयर पर बैठा है, उसकी टांगो पर कंबल है। औरत एक दीवान पर बिस्तर बिछा रही है।)

ख़ाविंद : तो अब राजी भी इस कमरे में रहेगी ?

औरत : क्यों ? और वह कहां जा सकती है ?

ख़ाविंद : पर घर में और भी कमरे हैं ?

औरत : यह मुझे कितनी बार बताना पड़ेगा कि वे रहने के लिए इस्तेमाल नहीं किए जा सकते।

ख़ाविंद : और मुझे यह कितनी बार कहना पड़ेगा कि ये सारी बातें बेहूदा वहम हैं। कोने वाला कमरा इस लिए बंद है क्योंकि वहां दादाजी मरे, अगला कमरा इस लिए बंद है कि बुआ ने आखिरी सांस उस कमरे में ली और उससे अगला इसलिए बंद है कि पिताजी ने उस कमरे में आंखें बंद कीं और उससे अगला कमरा... और अब बाकी रह गया है यह कमरा, जिसमें मुझे धकेल दिया गया है... ताकि एक दिन यह कमरा भी... मैं अब क्या कहूं और वह दिन दूर नहीं जब इस घर का आखिरी कमरा भी बंद हो जाएगा।

औरत : आप ये कैसी बातें सोच रहें हैं ?

ख़ाविंद : मैंने हमेशा यही सोचा कि अगर तू मेरे से पहले मरी और मरेगी तू इसी कमरे में– क्योंकि घर में अब और कमरा मरने के लिए नहीं रह गया और फिर मैं घर के सारे कमरे खोल दूंगा– और अगर मैं पहले मर गया तो फिर मुझे क्या फर्क पड़ता है कि यह कमरा भी बंद हो जाए।

औरत : मेरे मरने के बाद उन सब रूहों के साथ रह सकोगे जो इन कमरों में मौजूद हैं ?

ख़ाविंद : पिछले बीस सालों से मैं तेरे साथ रह रहा हूं और मेरा ख़्याल है कि उन रूहों के साथ रहना इससे ज़्यादा मुश्किल नहीं होगा। पर मुझे उस जवान लड़की की फिक्र है, जो अब यहां आ रही है।

औरत : आपको उसकी फिक्र करने की ज़रूरत नहीं, वो अपनी मौसी के घर आ रही है और अब सिवा मेरे उसका और है भी कौन?

ख़ाविंद : दुख भी तो यही है कि सिवाए तेरे उसका कोई है भी नहीं।

औरत : यह आप क्या कह रहे हैं? क्या मैं इतनी बुरी हूं?

ख़ाविंद : बुरी या भली के बारे में फैसला नहीं दे सकता, पर एक बात ज़रूर है कि तू एक कठोर वृक्ष है, जिसकी छाया में कोई भी कोंपल फूट नहीं सकती।

औरत : आपको भी तो इस छाया के नीचे रहते इतने बरस हो गए हैं, आपको तो कुछ नहीं हुआ?

ख़ाविंद : मेरा क्या है? मैं तो उन ढीठ बूटियों में से हूं जिन्हें धूप, छाया, गर्मी, सर्दी, बारिश, सूखे का कोई फर्क़ नहीं पड़ता। इन बूटियों को तो उम्र का अपना वक़्त पूरा करना होता है। पर उस लड़की की बात कुछ और है, जहां तक मेरा ख़्याल है, तूने उसकी मां को अभी तक मुआफ नहीं किया है, बेशक वो तेरी छोटी बहन थी।

औरत : हां, मैं कैसे भूल सकती हूं कि उसने मेरी मर्जी के ख़िलाफ शादी की, मैं कैसे भूल सकती हूं कि वो कुल को कलंकित करके घर से भाग गई।

ख़ाविंद : कौन सा कुल? जिनकी रूहें उन कमरों की कतारों में बंद है, जिन पर तू ताले लगाकर पहरेदार बनी बैठी है। बेचारी तड़पती रूहें जो इस बात से कलंकित हो गई कि घर की एक जवान लड़की ने दिल की बात मानकर किसी से प्रेम कर लिया था... च'...च'...।

औरत : आपको इस तरह की बातें करने का कोई हक़ नहीं।

ख़ाविंद : हां मुझे कोई हक़ नहीं, मैं तो अपाहिज ठहरा, जो किसी के सहारे के बिना दो क़दम नहीं चल सकता, उन कमरों में मुर्दा रूहें बंद हैं और इस कमरे में एक ज़िंदा रूह... पर जो लड़की यहां आ रही है, वह कोई रूह नहीं, जीती-जागती इंसान है, जिसके दिल में ज़िंदगी के लिए जोश ठाठें मार रहा होगा और मैं नहीं चाहूंगा कि वो इस कब्रिस्तान में कदम रखे।

औरत : कब्रिस्तान?

ख़ाविंद : हां कब्रिस्तान, जहां मानवीय मूल्यों की नहीं रिवायतों की कद्र है, जहां जीती जागती ज़िंदगी की नहीं बल्कि पथरायी ज़िंदगी की कद्र की जाती है, जहां ज़िंदगी को मजबूर किया जाता है कि वह किसी के इशारे पर चले, मुझे ज़िंदगी के इस चलन से नफ़रत है।

औरत : जिस पर घर चलाने की ज़िम्मेदारी हो, वह बेहतर जानती है कि घर के लिए क्या ठीक है और क्या नहीं ?

ख़ाविंद : और मुझे इतराज भी इसी बात का है कि घर को ठीक चलाने के बहाने घर की ज़िंदगी का दम घोंट दिया गया है। अगर तू ताले न जड़ती तो वे रूहें घर में पता नहीं क्या हुड़दंग मचा देतीं।

औरत : पर आज अचानक ये सारी बातें करने की क्या मजबूरी आन पड़ी है ?

ख़ाविंद : ये बातें बहुत समय से मेरे सीने में सुलग रही थीं, पर मैंने कभी कही नहीं थी, क्योंकि मुझे पता था कि मैं ज़िंदगी के उस मोड़ पर पहुंच गया हूं जहां सावन की हरियाली या पतझड़ का पीलापन कोई मायने नहीं रखता, पर जबसे राजी के आने की बात सुनी है तो सब कुछ मेरी बर्दाश्त से बाहर हो गया है, खुदा के वास्ते उसे इस पथराए माहौल में मत ला।

औरत : *(जैसे उसकी बातों की तरफ कोई ध्यान नहीं दे रही)* आपका सूप तैयार है और मेरा ख़्याल है अपने दिमाग पर बोझ रखना आपकी सेहत के लिए ठीक नहीं है।

ख़ाविंद : हां, मेरी सेहत के लिए ठीक नहीं, अगर सेहत नाम की कोई चीज़ अभी मुझमें बची है—

औरत : और राजी का यह बिस्तर मैंने लगा दिया है, बचपन से उसका आपसे खास प्रेम है। उसे कहानियां सुनने का शौक है और आपको सुनाने का।

ख़ाविंद : हां बचपन में वह एक कहानी बार-बार मुझे सुनाने को कहती थी— ''एक था शहजादा, जिसका किसी परी से प्रेम था, पर उस परी का दिल किसी बूढ़ी चुड़ैल ने अपने जादू से वश में कर रखा था। शहजादे ने बड़ी टक्करें मारी, पर बूढ़ी चुड़ैल ने परी का दिल नहीं छोड़ा। दोनों संघर्ष करते-करते हमेशा के लिए खत्म हो गए'' ज़िंदगी से बूढ़ी चुड़ैलों का जादू पता नहीं कब खत्म होगा ?

औरत : पर आपको इन मनगढ़ंत कहानियों के लिए किसने कहा ?

ख़ाविंद : ये मनगढ़ंत नहीं हैं, ये ज़िंदगी का सच हैं, ज़िंदगी का निचोड़ हैं।

औरत : *(ध्यान दिए बग़ैर)* राजी को अब तक आ जाना चाहिए था, गाड़ी का वक़्त हो गया है, कहीं रात की तरह फिर तार ना आ जाए। वो प्रोफेसर कौन है, जिसकी पत्नी का टेलीफोन आया था?

ख़ाविंद : वो युनिवर्सिटी में साइकोलॉजी का प्रोफेसर है, यहां छावनी में तो उसका घर है।

औरत : पर उसका राजी से क्या ताल्लुक है? वो वहां क्या करने गया है?

ख़ाविंद : वो उनके परिवार का दोस्त है, राजी के पिता का विद्यार्थी भी रहा और कलीग भी, वो वहां हमदर्दी ज़ाहिर करने गया होगा।

औरत : पर हमदर्दी ज़ाहिर करके वापिस आ जाता, वहां रात को रुकने का भला क्या मतलब हुआ?

ख़ाविंद : हो सकता है अकेले घर में राजी को डर लगता हो और उसने ही न आने दिया हो।

औरत : पर उसकी बीवी तो अजीब-अजीब सवाल कर रही थी।

ख़ाविंद : बीवियों की आदत होती है कि वे अजीब-अजीब सवाल करें।

औरत : अगर आदमी अकेली जवान लड़की के पास रात को एक ही मकान में रहे तो बीवियां सवाल करेंगी ही और राजी को अभी ज़िंदगी का तजुरबा ही क्या है? उसकी मां की मिसाल मेरे सामने है और मैं किसी किस्म की लापरवाही नहीं करना चाहती।

ख़ाविंद : तू फिक्र मत कर, अगर वह इस कमरे में महीना निकाल गई तो फिर उससे यह उम्मीद नहीं रखी जा सकेगी कि वह साहसी कदम उठा सके।

औरत : क्या मतलब?

ख़ाविंद : ये चारदीवारी, बंद कमरों का पड़ोस, तेरी पहरेदारी, यहां बस ज़िंदगी रेंग सकती है, पक्षियों की तरह परवाज़ भरना उसकी किस्मत में नहीं रहता *(औरत चुप रहती है)*... अब कह दे मेरा सूप तैयार है।
(औरत फिर भी चुप रहती है। बाहर से राजी के कदमों की आवाज़, उसने ब्रीफकेस उठा रखा है।)

राजी : *(चाव से)* आंटी *(औरत उसे अंक में भर लेती है। ख़ाविंद उसे प्यार देता है)* अंकल, ये हैं प्रोफेसर नागी।
(प्रोफेसर अंकल से हाथ मिलाता है- आंटी की तरफ भी देखता है, पर वह त्योरियां चढ़ा लेती है।)

औरत : *(रूखे स्वर में)* राजी, इनकी वाकफ़ियत हमें पहले ही मिल चुकी है, प्रोफेसर साहब की बीवी का रात को फोन आया था।

प्रोफेसर : उसने आपको फोन किया था? फिक्र कर रही होगी।

औरत : हां, ख़ाविंद अगर रात को घर न पहुंचे तो बीवी का फिक्र करना स्वाभाविक है।

राजी : ये तो आंटी आना चाहते थे पर मैंने ही नहीं आने दिया।

औरत : अच्छा होता, अगर तुम शाम की गाड़ी पकड़कर रात तक यहां पहुंच जाते।

राजी : पर आंटी कितना कुछ करने वाला था, और फिर डैडी के कुछ कागज थे, कंपनियों के हिस्सों के, बैंक के, इन्कम टैक्स के, और सब कुछ 'सॉर्ट आऊट' करने के लिए मुझे इनकी मदद की ज़रूरत थी।

औरत : तो फिर इन्होने 'सॉर्ट आऊट' कर दिया है न?

राजी : आंटी अगर ये न होते तो मैं उलझनों में फंसी रहती।

प्रोफेसर : ये कागजों का मामला होता ही उलझन भरा है, आदमी ख्वामख्वाह उलझकर रह जाता है।

औरत : शुक्रिया प्रोफेसर साहब, आपने मेरी भानजी को उलझनों से बचा लिया, अब बेहतरी इसमें है कि आप जल्दी से घर पहुंचें। यह न हो कि आपकी बीवी किसी उलझन में फंस जाए।

प्रोफेसर : जी?

ख़ाविंद : *(अपने ही ध्यान में)* लाखों अंगुलियां उलझन सुलझावन हारी, तेरी जुल्फ का सीधा न बाल हुआ।

प्रोफेसर : आपने मुझसे कुछ कहा?

ख़ाविंद : नहीं अभी तो कुछ नहीं कहा, पर बैठो, कुछ कहूंगा ज़रूर। *(प्रोफेसर अभी असमंजस में ही है कि औरत उठती है।)*

औरत : *(जाते हुए दरवाज़े पर)* राजी तू मेरे पास किचन में आ। *(बाहर आ जाती है)*

राजी : आई आंटी, *(प्रोफेसर से)* डियर, आप अंकल के पास बैठो, अंकल बड़ी दिलचस्प शख़्सियत हैं।

ख़ाविंद : *(दूसरी ओर देखते हुए)* डियर... तो बात यहां तक पहुंच गई है!

प्रोफेसर : आपने मुझसे कुछ कहा?

ख़ाविंद : नहीं तो... वैसे आपको इस सारे परिवेशे को देखकर हैरानी तो हो रही होगी?

प्रोफेसर : काफी बड़ी जगह है।

ख़ाविंद : हां बहुत बड़ी जगह है, बहुत से कमरे हैं, पर सारे बंद।

प्रोफेसर : सारे बंद? क्यों?

ख़ाविंद : क्योंकि इस घर की यह रवायत है कि जिस कमरे में कोई आदमी दम तोड़ दे, वह कमरा उसकी रूह को अलॉट कर दिया जाए, इसलिए अब घर के सारे कमरे 'ऑक्यूपाइड' हैं, सिवा इस कमरे के, जिसे फिलहाल मैंने 'ऑक्यूपाइ' कर रखा है, पर राजी का बिस्तर भी यहां लग गया है।

प्रोफेसर : बड़ी अजीब बात है?

ख़ाविंद : इसमें कुछ अजीब नहीं, यह सिर्फ एक औरत के दिमाग का फितूर है, जो ज़िंदगी को बंद कमरों में कैद रखना चाहती है क्योंकि उसका ख़्याल है कि खुले कमरे और खुले दिमाग उसकी 'अथॉरिटी' के लिए ठीक नहीं हैं।

प्रोफेसर : राजी की मां भी इसी घर में रहती थी?

ख़ाविंद : हां प्रोफेसर, वो भी इसी घर की उपज है, ज़िंदगी जब चारदीवारी में बंद हो जाए तो फिर एक ही रास्ता बचता है दीवारों से टक्करें मार मारकर खुद को खत्म कर लिया जाए या फिर खिड़की के रास्ते बाहर कूदने का 'रिस्क' लिया जाए। राजी की मां ने वही रिस्क लिया, राजी के बारे में अभी मैं कुछ कह नहीं सकता। 'बाइ द वे' आपका राजी से क्या रिश्ता है?

प्रोफेसर : क्या मतलब?

ख़ाविंद : घबराओ मत, मैं उन लोगों में से नहीं जो पहले रिश्ते पुछते हैं और फिर उन रिश्तों पर तबसरे करते हैं। और हां जिस बौखलाहट में आपकी बीवी ने टेलिफोन किया था, उससे साफ ज़ाहिर है कि आपका अपनी बीवी के साथ वह रिश्ता नहीं जो एक ख़ाविंद का बीवी के साथ होता है और जिस तरह से राजी के कहने पर शाम की गाड़ी पकड़ने की बजाय आपने वहां रहना मुनासिब समझा वह यह बताने के लिए काफी है कि राजी से आपका रिश्ता सिर्फ एक दोस्त की बेटी वाला रिश्ता नहीं हैं।

प्रोफेसर : राजी को मेरी ज़रूरत थी।

ख़ाविंद : ये हुई न बात, राजी को आपकी ज़रूरत थी और आपको राजी की, पर मैं आपको एक मित्रतापूर्ण सलाह दूंगा कि इस ज़रूरत की बात

आप इस घर में नही करें तो अच्छा है...

प्रोफेसर : जी।

ख़ाविंद : और भी अच्छा हो अगर आप इसी वक़्त चले जाएं क्योंकि घर में आपकी बीवी को आपकी ज़रूरत है... बाकी मैं राजी से कह दूंगा कि वो कल दोपहर दो बजे गिरजे के पीछे वाले जंगल में आपसे मिले... मेरा मतलब है जिस तरह प्यार करने वाले आपस में मिलते हैं। फूलों की खुशबू का आंनद हरेक की किस्मत में नहीं बेटा।

औरत : आपके सूप का वक़्त हो गया है, मैं ला रही हूँ।

ख़ाविंद : हां मेरे सूप का वक़्त हो गया है...

(औरत बाहर जाती है)

ख़ाविंद : हां राजी तो फिर प्रोफेसर साहब ने क्या फैसला किया है?

राजी : अंकल?

ख़ाविंद : देख मुझ से छुपाने की ज़रूरत नहीं, मुझे सब पता है।

राजी : अंकल मैंने तो फैसला कर लिया है।

ख़ाविंद : मुझे पता है कि तूने फैसला कर लिया है पर मसला तो यह है कि प्रोफेसर साहब ने क्या फैसला किया है?

राजी : वो मेरे फैसले से सहमत हैं।

ख़ाविंद : क्या वो तेरे फैसले से सहमत हैं या उन्होंने अपना कोई फैसला कर लिया है?

राजी : मैं समझी नहीं।

ख़ाविंद : तुझे समझना चाहिए कि प्रोफेसर साहब जिम्मेदारियों से मुक्त नहीं है। उनकी एक बीवी है जो पिछले आठ सालों से उनके साथ रह रही है।

राजी : पर उनको उससे प्यार नहीं है।

ख़ाविंद : पर फिर भी वह उनकी बीवी है।

राजी : वे कहते हैं कि वे उससे तलाक ले लेंगे।

ख़ाविंद : इतनी आसानी से उनका पीछा छूटने वाला नहीं और उस रात जब प्रोफेसर साहब तेरे पास थे; और जिस तरीके से उन्होंने फोन किया, उससे साफ है कि जो तू सोच रही है वो इतना आसान नहीं है।

राजी : मैं कुछ भी नहीं सोचती।

ख़ाविंद : अच्छा होता अगर तू कुछ भी न सोचती। उस रात के बाद से यहां न आती— इस चारदीवारी के घेरे में, यहां आदमी की सोच उलझकर

रह जाती है। उस रात तू ज़िंदगी का अहम मोड़ मुड़ सकती थी।

राजी : उस रात... उस रात का मुझे कुछ भी याद नहीं कि क्या हुआ? मैं अकेली थी, इतनी बड़ी दुनिया में अकेली, डैडी की मौत के बाद मैं चाहती थी कि किसी के सीने से लगकर रो सकूं, अपना दिल हल्का कर सकूं।

ख़ाविंद : और उस वक़्त प्रोफेसर साहब वहां पहुंच गए?

राजी : हां, और फिर मुझे कुछ भी पता नहीं चला। और मैंने अपना सबकुछ उनके सुपुर्द कर दिया।

ख़ाविंद : पर प्रोफेसर साहब को पता होना चाहिए था।

राजी : ख़ैर, अब हमने फैसला कर लिया कि उस रात के सपने को ज़िंदगी की असलीयत में बदल दें।

ख़ाविंद : तुम्हें यकीन है कि तुम यह कर सकोगे?

राजी : यक़ीन जैसा यक़ीन अंकल।

(औरत आती है। उसके हाथ में सूप का प्याला है।)

औरत : आपका सूप मैं ले आई हूं और राजी, प्रोफेसर साहब की बीवी आई है, वह तुझसे मिलना चाहती है।

(राजी घबराती है)

ख़ाविंद : वो यहां किसलिए आई है? तुम कह देती कि राजी घर में नहीं है।

औरत : मैं झूठ नहीं बोलती।

ख़ाविंद : पर एक घंटा पहले तो बोला था।

औरत : वह मेरा फर्ज़ था... हां आपका सूप ठंडा हो रहा है और ठंडा सूप आपकी सेहत के लिए ठीक नहीं।

ख़ाविंद : सेहत... सेहत... सेहत।

राजी : अंकल?

ख़ाविंद : मेरी बच्ची... तू भयानक आग में फंस गई है... ईश्वर तेरी रक्षा करे।

(राजी धीरे-धीरे बाहर जाती है और फेडआऊट होता है।)

दूसरा दृश्य

(रोशनी होती है और ख़ाविंद अपनी कुर्सी पर है। दीवान पर राजी की लाश है, जिस पर चादर डाली हुई है। एक शोकमय वातावरण है— ख़ाविंद चुप बैठा है। प्रोफेसर आता है)

ख़ाविंद : आओ प्रोफेसर, कैसे आए हो ?

प्रोफेसर : मैं राजी से कहने आया हूं कि ...

ख़ाविंद : कि वह सबकुछ को ज़िंदगी का एक हादसा समझ कर भूल जाए।

प्रोफेसर : हां, अगर भूल सकती हो।

ख़ाविंद : पर ये बातें पहले सोचनी चाहिए थीं।

प्रोफेसर : सोची थीं।

ख़ाविंद : पर एक मासूम के दिल से खेलने का आपको क्या हक़ था ?

प्रोफेसर : मैंने तो राजी को कितनी बार समझाना चाहा...

ख़ाविंद : पर आप समझा न सके क्योंकि आपकी लालसा ने आपको यह करने नहीं दिया।

प्रोफेसर : आप मुझ पर किसी किस्म का इल्ज़ाम लगा रहे हैं ?

ख़ाविंद : किसी किस्म का नहीं, बल्कि एक मख़्सूस इल्ज़ाम... आप उस मासूम की ज़िंदगी की तबाही का कारण बने हैं प्रोफेसर, आप तो साइकोलॉजी के प्रोफेसर हैं... एक जवान हो रही लड़की क्या सोचती है, क्या चाहती है, उसका तो आपको पूरा पता था।

प्रोफेसर : हां मैं पूरी तरह समझता हूं।

ख़ाविंद : फिर आपको क्या हक़ था कि कोई ऐसा खेल शुरू करो, जिसका अंजाम मौत के सिवा और कुछ नहीं हो सकता।

प्रोफेसर : मौत ?

ख़ाविंद : हां मौत, उस चादर के नीचे वो लड़की लेटी है, जो सदा के लिए सो गई है क्योंकि वह अपने पहले और एकमात्र प्यार में हार नहीं देखना चाहती थी। उसने नींद की वे गोलियां अपनी तक़दीर समझ कर खा ली हैं जो आपकी बीवी अपने लिए लाई थी।

प्रोफेसर : पर वह तो धमकी होगी, यह खेल उसने मेरे साथ कितनी बार खेला है।

ख़ाविंद : और आपके खेल में एक वह कली दम तोड़ गई है जिसे ज़िंदगी की बहार अभी देखनी थी।

प्रोफेसर : मुझे अफसोस है।

ख़ाविंद : यह भी आप जैसे समझदारों की रिवायत है, ज़िंदगी को संकट में डालकर एक मोड़ पर लाकर खड़ा करना और फिर रास्ता दिखाए बगैर खिसक जाना यह कहकर कि 'मुझे अफसोस है' पर आपके कहने से वह वापिस नहीं आ जाएगी।

(प्रोफेसर राजी तरफ बढता है)

ख़ाविंद : कृपा करके उस तरफ कदम मत बढ़ाना... *(प्रोफेसर रुक जाता है)* ज़िंदगी जब संकट में होती है, तब वह सहारे ढूंढ़ती है, पर दुखांत उसका यह है कि बहुत बार वह जिसका दामन थाम लेती है वही उसे दगा दे जाता है, जाओ प्रोफेसर, जाओ *(चीखकर)* कृपा करके जाओ... मैं कहता हूं चले जाओ। *(प्रोफेसर जाता है, ख़ाविंद का सांस उखड़ जाता है— औरत दूसरी तरफ से आती है।)*

औरत : कौन था? क्यों इतना ऊंचा बोल रहे थे?

ख़ाविंद : प्रोफेसर था।

औरत : वो यहां क्या लेने आया था?

ख़ाविंद : कहने आया था, मुझे अफसोस है।

औरत : मुझे तो पहले दिन से उससे नफरत थी। मेरी बहन की एकमात्र निशानी, हमदर्दी ज़ाहिर करने आया और उसे निगल गया।

ख़ाविंद : पर मैं इल्ज़ाम की उंगली तुम पर रखता हूं।

औरत : मुझ पर क्यों?

ख़ाविंद : राजी तेरे पास आई थी, अगर तू उसे एक मां का प्यार देती, उसका विश्वास जीतती तो वह मायूस होकर यह आख़िरी कदम न उठाती। पर उसने अपने आप को बिल्कुल बेसहारा और यतीम समझा। रात को वह रोती रही। मैं चाहता था कि उसे कुछ तसल्ली दूं। पर मैंने पहली दफा यह महसूस किया कि एक जवान लड़की को मां के प्यार की कितनी ज़रूरत होती है, पर तेरे में वो मां वाला दिल कहां? तू तो बंद कमरों को ही ज़िंदगी की गति समझती है। मुर्दा रूहों को संभालने में तेरा यक़ीन है, पर जीवित मनुष्यों में?

औरत : मैं उसे मां से बढ़कर चाहती थी, पर घर में एक अनुशासन रखना मेरा फर्ज़ है।

ख़ाविंद : किस किस्म का अनुशासन? कि बंद कमरे कोई न खोले, फूलों से कोई प्यार न करे, ज़िंदगी को सिर्फ उस नज़र से देखे जिस नज़र से तू देखती है?

औरत : दुनिया के निज़ाम इसी तरह चलते हैं, अगर हर कोई अपनी-अपनी मर्ज़ी करने लगे तो अराजकता फैल जाए।

ख़ाविंद : पर दुनिया के निज़ाम इस तरह भी नहीं चलते कि विचारों को ताले लगा दिए जाएं, ज़िंदगी को चारदीवारी में जकड़ दिया जाए।

औरत : आज़ादी एक हद तक दी जा सकती है।

ख़ाविंद : पर वह हद क्या है? कौन तय करता है? वह कौन है? क्या वह किसी उसूल से तय की जाती है या किसी अकेले व्यक्ति के दिमाग़ के फितूर के मुताबिक तय की जाती है?

औरत : पर इन बातों का हश्र भी मुझ से भूला नहीं है। मैं तो कहती हूं कि जिस खुलेपन का आपने झंडा उठा रखा है, वही राजी की मौत का कारण बना है।

ख़ाविंद : वह कैसे?

औरत : आपको पता था कि वह प्रोफेसर के बारे क्या विचार रखती है। आप जानते थे कि प्रोफेसर की क्या जिम्मेदारियां हैं। आप जानते थे कि राजी ने ग़लत रास्ता अपनाया है, पर फिर भी आप उसे गिरजे के पीछे जंगलो का रास्ता बताते रहे।

ख़ाविंद : यह तुम्हें कैसे पता है?

औरत : मैं इस घर की मालकिन हूं। इस घर में जो कुछ भी होता है, उसका पता रखना मेरा फर्ज़ है। मैं कहीं भी रहूं, मेरे कान हमेशा आपके इर्द-गिर्द की दीवारों से सटे रहते हैं।

ख़ाविंद : मैं समझ गया इन दीवारों में मुझे कैद करके तेरी तसल्ली नहीं हुई, इन दीवारों से भी तूने कान लगा लिए।

औरत : और मैं तो कहूंगी, राजी की मौत की ज़िम्मेदारी आप पर है।

ख़ाविंद : मुझ पर?

औरत : हां आप पर, आप इस सारे खेल में तमाशबीन बने रहे। आपके अचेत मन में एक ख़्वाहिश है कि आप अपने ख़्वाबों की महबूबा से गिरजे के पीछे जंगलों में मिलें... पर आप अपनी इस ख़्वाहिश को पूरा नहीं कर सकते, इसलिए आप राजी को वह रास्ता बताकर खुद को तसल्ली देते रहे।

ख़ाविंद : यह झूठ है।

औरत : नहीं, यह सच है, यही आप जैसे बुद्धिजीवियों का 'करेक्टर' है— लोगों को झूठे सपनों में उलझाना और फिर तमाशा देखना— अपाहिज़ टांगों की तरह आपकी सोच भी अपाहिज़ है। इसलिए राजी की मौत की ज़िम्मेदारी मैं उतनी ही आपकी मानती हूं, जितनी उस पढ़े-लिखे प्रोफेसर की।

ख़ाविंद : ज़ालिम, ऐसा मत कह।

औरत : क्यों तकलीफ हुई न ? दूसरों को इल्ज़ाम देना आसान है, पर अपने पर इल्ज़ाम लेने की हिम्मत चाहिए।

ख़ाविंद : चुप हो जा, कम्बख़्त, चुप हो जा।

औरत : नहीं, आज मैं चुप नहीं रहूंगी। बहुत देर मैं आपकी जली-कटी सुनती रही, अब आपको मेरी भी सुननी पड़ेंगी। आपने ज़िंदगी की अपनी कौन सी जिम्मेदारी निभाई है। अपनी दबी ख़्वाहिशों को पूरा करने के सपने को आपने फ़राखदिली से आज़ादी या 'लिबरलिज़्म' के नाम दे दिए हैं, पर यह ढोंग है, दिखावा है, पाखंड है।

ख़ाविंद : पर इन दबी ख़्वाहिशों की ज़िम्मेदारी भी तो इन बंद कमरों पर है।... ये बंद कमरे जो मनुष्य की सोच को साधारण नहीं रहने देते, ये बंद कमरे जो ज़िंदगी की मौत का कारण बनते हैं।

औरत : पर ये बंद कमरे ज़िंदगी के किस शोबे में नहीं ? दरअसल हम सारे ही बंद कमरे हैं। ...वो समझदार प्रोफेसर जो दिलों का 'साइको-पनालसिस' तो कर सकता है, पर जिसमें हौसला नहीं कि वह कोई रास्ता तलाश सके, इसलिए वह खुशदिल, मौकापरस्त मासूमों को अपनी हवस का शिकार बना लेता है। आप एक अपाहिज बुद्धिजीवी, जो ज़िंदगी में खुद कुछ करने लायक नहीं, अपनी अधूरी ख़्वाहिशों को पूरा करने के लिए दूसरों को कठपुतली बनाना चाहते हैं...

ख़ाविंद : और तू ताकत की भूखी हुकुमत करने की लालसा में...

औरत : हां मैं ताकत की भूखी हूं, मुझ में हुकूमत करने की लालसा है, पर यह किसमें नहीं है ? कौन नहीं चाहता ? जो खुद अपाहिज हो जाते हैं, कुछ करने लायक नहीं रहते, वही ये इल्ज़ाम लगाते हैं... *(वक़्फ़ा कुछ देर चुप)* अच्छा चलो आपका सूप तैयार है और किचन का एक हिस्सा मैंने तैयार कर दिया है। यह कमरा अब बंद रहेगा।

ख़ाविंद : नहीं, नहीं... मैं तुम्हें यह कमरा बंद नहीं करने दूंगा।

औरत : पर यह इस घर की रिवायत है।

ख़ाविंद : पर यह रवायत अब बदलेगी। इस मासूम की मौत इस घर में शहादत का दर्जा रखेगी। यह बंद कमरों की रवायत अब बदलेगी... अब बदलेगी।...

(औरत कुर्सी को किचन की तरफ धकेलना चाहती है पर ख़ाविंद नीचे गिरकर कुर्सी को जकड़ लेता है और इसी कशमकश में पर्दा गिरता है या अंतिम फेडआऊट होता है।)